दीवारें पहले बनवाएँ, पिलर बाद में

पिलर की सरिया 90 डिग्री पर नहीं, 120 डिग्री पर मोड़ें

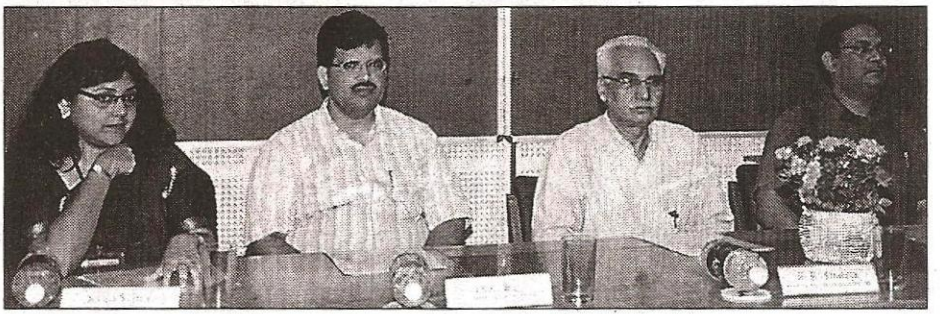

आईआईटी में सोमवार को भूकंपरोधी भवनों के निर्माण पर विशेषज्ञों ने की चर्चा

वरिष्ठ संवाददाता कानपुर

- भूकम्परोधी तकनीक से मजबूत बन सकेंगे मकान
- आईआईटी की भूकम्परोधी तकनीक 53 देशों में पहुँची
- नेशनल वर्कशॉप में देश के 17 कॉलेजों के छात्र जुटे

भूकम्प रोधी भवनों के निर्माण के लिए आईआईटी में सोमवार से छह दिवसीय वर्कशॉप शुरू हुई। इसमें देश के 17 कॉलेजों के 56 छात्र भाग ले रहे हैं। भूकम्परोधी तकनीक के प्रति जागरूकता फैलाने वाली आईआईटी की संस्था एनआईसीईई (नाईसी) का दायरा अब तक 53 देशों में फैल चुका है। नाईसी इन्चार्ज सुरेश एलावाली ने बताया कि साधारण व्यक्ति को भी मजबूत मकान बनाने के लिए कम से दो बातों का ध्यान रखना चाहिए। पहला यह कि वह दीवारें पहले बनवाएँ और पिलर बाद में और दूसरा पिलर की सरिया 90 डिग्री पर न मोड़ी जाएँ बल्कि 120 डिग्री पर मोड़ी जाएँ।

उद्घाटन सत्र में सस्थान के उप निदेशक प्रोफेसर आरके थरेजा ने कहा कि मकानों को भूकम्परोधी बनाने के लिए डिजाइन का अधिक महत्व होता है। इस तकनीक पर आधारित मकान तब ही बनाए जा सकेंगे जब नई पीढ़ी के छात्रों को इसकी जानकारी दी जाए। वे नई तकनीक से पूरी तरह परिचित हों। डॉक्टर ओंकार सिंह ने कहा कि आईआईटी में भूकम्परोधी तकनीक पर काफी काम हुआ है और इसका लगातार विस्तार भी होता जा रहा है।

13 जुलाई को यहाँ स्कूली बच्चों की क्विज प्रतियोगिता होगी जिसमें केन्द्रीय विद्यालय-आईआईटी, वुडबाइन गार्डेनिया, डीपीएस, मंटोरा पब्लिक स्कूल और डॉक्टर वीरेन्द्र स्वरूप अवधपुरी स्कूल भाग लेंगे। नाईसी की मदद से आईआईटी का दायरा विदेश में भी काफी बढ़ गया है। यहाँ डॉक्टर दुर्गेश रॉय, प्रोफेसर केया मित्रा, प्रोफेसर वसुधा गोखले और प्रोफेसर मीरा शिरोलकर ने भी विचार व्यक्त किए।